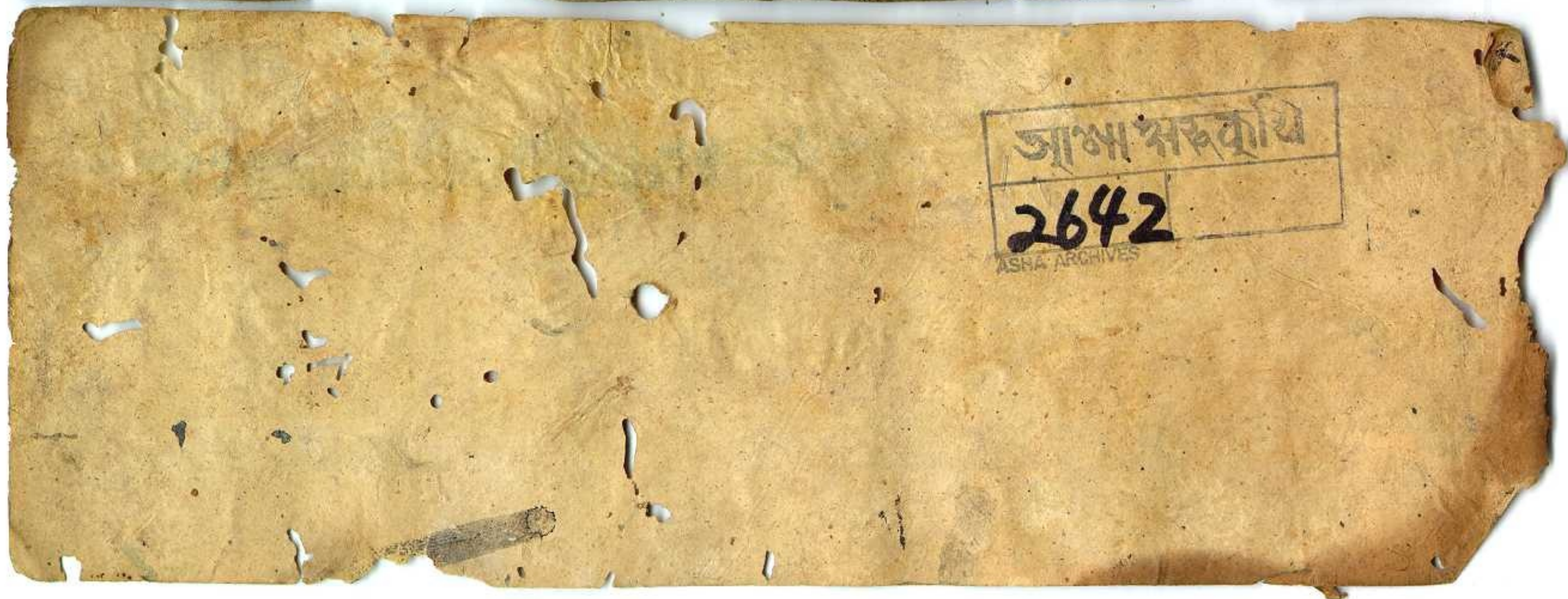






आशा सरकारी
2642
ASHA ARCHIVES

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

(कीलनकावना॥५॥) टिनिहृन्मनकचंजाननविस्फुल्लं॥ विष्णुवृक्षसिन्धु
 कंकालकीलनककुल
 कालकयं३लं॥ वक्राच
 ॥ मायिकुमिविकाया॥ न
 लीलेलाकाविजयायचनामावक्रकंकालाविष्णुजस्यैस्सु॥ ववकाली

बाल्यालीचहादयनाकमकुधनकल्याननलवकलमालिचिमंययः॥ क
 लानिवालिनिखिलजगवि
 सुनया॥ दुष्टाकठकलल
 भवलाखलया॥ याद्यवम
 यीलकृन्वः॥ नक्षकाश्विनागवाजकृन्कुलवक्रवक्रयंष्टाधवायावक्रस्य

शिद्वयं यृष्टलघं कनिष्ठाद्वयं हारवलिर्न कर्कनीद्वयं यृष्टर्नर्तुलाकावीर्जं य मूडया स्वाशायकसमाय कयालखद्वंगधनो गजकु रुते चिह्नमिदद्विदोद्युष्ट समयन॥ यज्ञाधुयनीलाङ्ग	नसर्वकवासां अकृष्टयाष्टावासां काचमूखलदिमुखसंगनं कंकालाग्नय नाकृष्टाकं काचाम् x हं x लिनदक्षिकोद्युष्ट स्वानडाकादष्टिर्न वकचरुवाच झकानवाच
--	--

वक्षाया वस्वानमस्यं चीय॥ यं अयदा मुनि वजनथिसं शिद्वचनजायजाय ऊधमो॥ नाकृचध्वकष्ट मि ववामवजमुष्टिनागृही दीघनादाश्चालिर्न कंकः यादं कानकादनवया कीलनमाय॥	याकाचयसां मचय कीलकंकल्यान कलन नदक्षिणकचनयध्वनचिद्रयवावृकं मुष्टल दक्षिणयष्टिविद्वान्पुष्टवष्ट्या॥ ॥ कंकचमयुजा ॥ ०००॥ कीलनविधिरावना॥
--	---

५५५

येन काले दत्त ज्ञाय कालावगाह्ये गान्धर्वस्य दत्त ज्ञाय ॥ ॥ धननंदिनमस्काच
कायक ॥ गीत विष्णुचक्र ॥ ७ ॥

३

ॐ नमः शिवाय चक्रसंस्मृत्या यथा गद्य चक्रा क्रियाविधिमाह ॥ यथमनन ॥
आचार्यस्य गुरुं गत्वा गुरुं
सत्तमधुलादि सुवर्णमः
गुथेष्टाकया कन ॥ ॥ अ
वेसत्वा नमसा चक्षुषा वा दृष्टं वृद्धं स्वयं किं स्यात् यथा कं सद्य गद्य चक्रमधुला

8

[illegible]

माचनुयुचनित्राव वरुसत्त्वयुजिनं वृंदंमद्यगृदिवाहु सद्यमधुलसुसाधिय
 कीःकीःहं स्वाहा॥दानयकि नाहंनोहंनोहंलिनायाथयह॥**शुकि**॥**वृंद**
 वीसादिहंनोसि सवेरुना ननायिना चयोनयविस्वाष्ट रुमियावमि
 नासुच। यथा मालवचरुमं हाकुमिहंननायिना नथामालववंजिवा
 सवेसत्त्वार्थकाचनानु। सवेसिदिष्टवृद्धार्थ सद्यमधुलं वय यामिहं॥यक्षयह

वयुजा॥ वृंकिरुमि(हाधनविधि॥ **॥नयद्रवाकुलुदुर्गचदनादि वरसुचकी**
 उहिचवालक हिरुचदन चाचकहा ममि यियंगु कल्याणकानि समि
 शुकं मिष्टीक विमलकुर्नेः। **सू**याद्यादि कंदत्वा गुचय हं या य चलन्य
 युजथाकमं युक्तालनंका लयित्वा नृत्यनचयविस्वा केथानुक्रमनस्य
 यनियं॥मुवाचार्यन चरुआदिन यथाविधिना स्य यतां हत्वा॥**धनकीलनय**

दि

जा शुचमधुलादि तिसमाधिना विधिवत् कथं ॥ दधयुजा धृष्टुनं सवृजन	
वान यके चियेथिय साच	लचक चचुसमचाचं कृत्वा चरु साविधिका
सुदचक मजलि स्वस्वमः	डोना हा साई यथा दत्ता कावय ॥ सावना ७
॥ यांरु थायिमां वरुवावा	दि वयां युथा याना नृचय दवी चय वा यच
मंरुही संस्वरयं विचिन् ॥ कस्मात् सिद्धादि विजम युत्वे चानिती हन देवता	

मूडा १

युवस्या ॥ आकर्षनादि निवाजन चक्षा ॥	॥ कथा युजा सावना ॥ गीतहाः
ठ आरुचन ॥ चक्षीः	कृष्टुल कष्टि चाचे कमीयला रुसा जथा
मं अक्षा सायिमा कावच	नमं रुव वेवाचना माय सिद्धिः ॥ छीरुचक
या रुहि निविचिन् कल्लन	सत्त्व कथा गता युवस्या अक्षा सादिया चनन
धृष्टादि मूडा ॥ अक्षा सादि स्वका वा नृवा निमाधि मूचा ॥ नीलाञ्ज यथादि मं य	

अविधिवत् ॥ श्रीनांठु ॥ णिबहि ॥ णिधूल मावाहय युचुयां नांठु रुसावायनां
 कालयत् ॥ णीवकुरु १ वृ
 ययत् ॥ वाद्यवम् ॥ णंमव
 ला ॥ णिकचकि ॥ णंधव १ धा
 वाचनीयत् ॥ रुदस्वाहा ॥ गृह्णदत्तमना विचकी ॥ अदीयात्मकं ॥ णीवकुरु सत्व
 * यं १

समुद्रयं वदित्वा ॥ त्मकं सत्तिगं ॥ कृष्ण ॥ णं वदधम्मो समत्वं कुरु १ अवा
 चिकत् ॥ रुदस्वाहा ॥ णंकीः
 रात्मकं ॥ णीवकुरु सत्वसामु
 मृयेन माविधयत् ॥ वत्तधु
 द्वादत्तमना विचकी ॥ वत्तसंक्रवात्मकं ॥ णीवकुरु सत्वसामुद्रयं वदित्वा ॥ त्मकं

॥ वाचक मडं हा धृतरात्र महा धृतरात्र दंडि जि न जि क हं रु द स्वा ला ॥ डं रु न २ म
 दि स्वा ला ॥ डं वा व न य हं हं
 क त्म कं ॥ श्री व द्ज स त्व स्य मुः
 दी य ह्म धृ क हं रु द ॥ डं व क
 वि व अ मा य सि धि म त्म व रा श्री व द्ज स त्व स्य मु द यं वा दि ध्या त्म कं स सि नं ॥ ८

श्री व द्ज हं हं वृ व क त्या दि ॥ ८ ॥ नि म नु न ना य व व द्ज मु द मा ला ॥ य न या रं ॥ ०
 डं क व २ य च ह्यु त्या दि ॥ ० ॥
 धृ वी त्या दि ॥ १ ॥ गृ द्ज द हं म ना
 ड यं वा दि व ध्या त्म स सि नं ॥
 य य मा ला स्व २ ही ल ही स्व २ म नु ना क स ना कि म नु नि ज हि व स मा वा रु य ॥ न द

नृपयज्ञेयनवलिंदियन॥ वादे निगेष्टुन॥ दवजाय॥ ननु कलिका वलिंदत्वाना	
वनदिनमस्काववादयन॥ ॥	ॐ नमः शीयद्वानृत्यधुवाय॥ ॥ सुस्यवमं
दद्वधुंशुदवविषाष्टुन॥	नाचकामवधुंशुनामादिचक्रवारुंयुक्तः
यचिरुवं ननु काकासदृशं	मर्कटं तद्विद्वानवचमवसावि-आगलं
धुवश्वा रुसादु दधुयानं चवठु रुगवर्नः यद्वानृत्यधुवस्य॥ अथिच॥ यामासं	

सावचकं विचवयनिमनः सति यागामरुता साधि जस्य सादादिषाठु निरुचु	
य स्वाभिमानिः ययव॥ नच	यस्यान्मवदु समुदयानिसुखं कल्याणाकारमु
कं कृ योनसाधियमं हि	वहीचदिनयं मगुवुसर्वकालं॥ अथिच॥ जः
सार्च रुजकाटि विरुनयश	यनृत्यान्मवः ययनमधुयानलं यननया (झ
निरिलि दी दीया। यामि (ष्ठा धूववा यगाधनकालिः कीनसाविस्कारिषः ययन	

रुधिव॥ ॥ कावाना॥ सुधवका यमिधना मुकालवीर्कं युयागक्षरं अहि नांष्टा रं वं नागर्कहालः डं वका यानेव कलाकं अ रुधवका (हिनमः स्वाहा॥ कनं सुवयकिविद्यालि यृष्टिहाला वरुणकानिकाधुदहाहनं यीनारुमावासवीः	वृदाः मकायप्रनागविकावा ॥ आवाहान॥ वनच० छीयं हं रुद्र स्वाहा॥ यजामनु॥ देहं १२ यं ला घं वा नयो॥ मुनि॥ च (धु) शं रु यकी यीनारुमावासवीः
--	--

धुः सकरुना घना कलधिरः चक्षुगहा मामकान् सुकार्थोयामद द्विका वावुखः यावां हिलियाहि चधनदं यियलयादं यं अ चमनादं यृष्टिं कडलदा॥ काववीर्कं कलाणीलि कनं चरु रं वं यं न गवृक्षः हां खयालनागनाविकावा॥	नः॥ रुकावधिव॥ ७ ॥ नवर्गजानेनदिन दचके ववा रुदायनी (धु) ना नक्षकनागनाग धुवा॥ कावाना॥ डरु ववीदायनीहिनाः हां खयालनागनाविकावा॥
---	---

क म जा द ना इ रु य क वः स द्या च मा ष नी ना व क्षि सु व वृ ष रु थ रु दी य किः
 ध्या मा रि क कौ ट कः ध्या वा ग रु क ग कि वा लि दः स मृ दि गां का लां कू लं
 या धि म सा (६) क ना न ना यि म नु च का षु रु क रि रा स च १॥ द ॥ च १४
 व र्ण जा न य व र स म न च रु क या न य क यी ल र्ण च वा १ वा वा दी च का
 य म रु क णा क लं क र्ण च वा व रु क च वा ॥ धू वा ॥ रा व ना ॥ द कि (६) वा वा रि

च का वा वि र्ण क यी च र्ण च वं क र्ण च र्णः च न च र्ण कू ल क ना णा अ व य रु ॥ आ
 वा रु न ॥ ६ आ वा वा दी रु व वा कं नु व रु च रु षी र्ण र्ण रु ॥ य जा म नु ॥ ६ र्ण
 रु रु वा वा दी न म स्वा दा ॥ य ला र्ण वा रु यी ॥ रु रु यं रु य ना य ॥ सु रु ॥ यी
 म्ना रु रु य मा यि रु य क रि न द रु त्रि या मं स दा आ रु धि म रि रु न ना वि
 च व च १ य धा रि डि का धा यः क ना स व म च रु कः यु कि दी नं च न कं च का म रु

कि यायि बहाचियति ग वृत्त क व न ॐ न म दि ति यु ॥ सु क नी १ कं कं रु ॥
 ॥ वाम न क ऊ नि न्यं द्या कि कां द द ता ॥ अ ॥ धृ ची क षा वा जा चं द य अ धू ना
 १ द म न दि वा ल या द मि व क च न ॥ द ॥ कृ त्व व न धृ वं न ति सु नु क ॥
 किं अ क का ध आ य नु धं द न क थ मि ॥ १ कं कं रु ॥ न ॥ य न
 क न बा जा अ क क व ना म य १ रु म रु ॥ दी दं नु अ षी च रु दा सा ॥ य ॥ १ ॥

५९

व ज्ञा धि य ति य वा य स य १ व क्क या षा व क्क द्या ट न क च मि न ॥ १ कं कं रु ॥
 कं कं रु ॥ वा ॥ स मि ल षा म ना थ न्य क रु न १ रु क व क थ ति सु नु
 अ क न दि दा यं ॥ १ ॥ य द षा षा जा ण च च का य चि १ ना थ रु वः
 आ क्क व क्क रु क क च न ॥ १ ॥ आ न य दा रु ग व न वि श्या वा रु क १ रु ॥
 ॐ ॥ चो द ग (१) धृ व न च वि क रु स कि १ ना थ म आ क्क य रु न दि व नु ति यु यं ॥

म ॥ अहो हुरु वनाथ वक्राशु मचि शुश्रुषं धाद्व विधानि रसमिव कच
 नं ॥ ॥ वद्व वलनाम अकु काध नाका दहादिगसि रुमाच ताडन क
 चामि श्वाद्युल चवर्हं व कठन धवि या गावनि कुलिहा हीणी न च २०
 लिना ॥ १० ॥ द्वा क ॥ अ कवा मिहं च या ह्यकं दहा यनं दी (हा) दहा ध
 दहा को (धा) दहा दिहा कीलय मद्य नाथ रु ॥ मूल प (०) ॥ नामु दहा यामि ॥ ॥

ए १२ यदु वेमं

नदन मुवा चा येहानि विद्युं विचि न मना सादन नृथेन काच यरु ॥ ० ॥ गीत
 डं खवरु ॥ ॥ यूरु वे ॥ द्वा दिहा गहा यचि वा नां कर्ष यरु ॥ किल न माः
 काठ यडं आः द्य १ द्याठ य १ ॥ द्वा दि मगहा यचि वा नां कीलय
 १ रुं १ रुट स्वाहा ॥ ॥ द्वा य स्वाहा ॥ य ला द्यं न यो ॥ सुनि ॥ यूरु सच
 यमथनी जीना ज्ञन युनि यरु ॥ धाच वृया यचं द्वा दं का क कं धुन मा म्यरु ॥

१ ॥ उक्तं च यथादिमगल यचिवानां कथयन् ॥ उं आः घ १ घा ट य १ य का
 दिमगल यचिवानां की
 यं वा नय ॥ सुनि ॥ उक्तं च
 की मचूयाश्च उचूका ध्यानु
 यचिवानां कथयन् ॥ उं घ १ घा ट य १ व वृक्षादिमगल यचिवानां की वय १

लय १ हं १ रु दं कु व वा य स्वाहा ॥ यं ला
 यला च उं ध्या व ध्या य का क वी ॥ मला लै द्यौ
 मा म्यं ॥ १ ॥ य धि म व वृक्षादिमगल

११

हं १ रु दं व वृक्षा य स्वाहा ॥ यं ला यं वा नय ॥ सुनि ॥ य धि म व वृक्षादि
 नागा धि म द नं ध्या वा रु द
 ध्या व ध्या नादिमगल यचि
 मगल यचिवानां की लः
 य ॥ सुनि ॥ दक्षिण रु म व ध्या नि रु ना रु द यो रु ना विनि ॥ ध्या व य ध्या व ना ठि ॥

सविक ना ध्या ना न न न मा म्यं ॥ ३ ॥ दक्षि
 वा चानां कथयन् ॥ उं घ १ घा ट य १ व वृक्ष म ना द
 य १ हं १ रु दं य मा य स्वाहा ॥ यं ला यं वा न

नमामिष्टुकलाननां॥ ४ ॥ अ० नवैस्त्राननादिषाणयचिवानां कथयन्॥ ५ ॥
आद्यःद्यानय० अ० आदिम
यस्त्राका॥ यंला० यंवाक्य
मनी॥ दकनादिधीमद० य
दिमगद्ययचिवानां कथयन्॥ ५ ॥ अ० नवैस्त्राननादिषाणयचिवानां कथयन्॥ ५ ॥

वाचानां कील य १ हं १ रु १ डं न ॥ अथ स्वाहा ॥ यं लाघं वा नथ ॥ अथि ॥ न ॥ अथः
 यीन च का का क वा ना धिय
 हं ॥ ५ ॥ वा यु वा म वृ ना
 द्या ट य १ वा ना दि षा ण ष य
 हा ॥ यं लाघं वा नथ ॥ अथि ॥ वा यु श च क स्या मा ङ्गि स्व षा ना धिय कि म द न ॥

॥ नमो कलहादिनां यथाविधिनां कृत्वा यथार्थं श्रुत्वा यथायथा ॥ रुवत व
 रुयायुयनाया ॥ गुचमधु लचकाचयन ॥ गीतमधमव ॥ क्षिचुचनाव
 यन ॥ कर्णयुनवल्लिचरु स्ययनायाय ॥ निष्ठावल्लिविषय ॥ गुचुनं ॥ २३
 नमोचययनं च नमस्वयं ययकिरिचिचकविंहातिवाचं वाचयित्वा
 रुचुडं निष्ठां रुचवायचित्ति ॥ किचानुयानमुखिकिरुष्टं वन्नामिमक

॥ व १

॥ रुचुडं रुचमर्थं सक्तं वचं कर्दिनां क्षिचि ॥ रुचा ॥ यं अयदायुजां कृत्वा गन
 मचवस्तुनायादिचरुका न यययय ॥ निमालिष्टाया ॥ नयचकृष्टाय
 रुचय ॥ दानयकिनामधु लचकृत्वा कृतां क्षीतीनानमस्तुवा मि ॥ वाधा
 मया ॥ नमस्तु चकृताथाय नमस्तु नदायन नमस्तु स्रष्टुयाय न
 मस्तु रुवताचका ॥ नमस्तु नमानमस्तु कृत्वा रुचानमस्तु मि ॥ वाधाचकाय

नमो भगवते ॥ ० ॥ समाधिका वयम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥
 नमो भगवते ॥ चक्राय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ २ ॥
 ० ॥ नमो भगवते ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ३ ॥
 वक्राय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ५ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ६ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ७ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ८ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ९ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १० ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ११ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १२ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १३ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १४ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १५ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १६ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १७ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १८ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १९ ॥

श्री हं १ रु ६ ॥ उं य म द शी हं १ रु ६ ॥ उं य म म थ नी र्थ हं १ रु ६ ॥ ध्याना नृ य ॥
 उं च नृ य रा य स्वाहा ॥ ॥ उं
 ना हं न व रु स रा वा म काः
 न ॥ **जा क का य ॥** गी न न म
 न व स धा च क नि र्थ न नं रु सं रु ना वा धि वृ दं धि शु हा रु ल ध रं द रु म वा ॥

रु य दं य रु हं यो च रु वं शानं न रु य ना वं जालं नृ या व मा व रु न रु रु ग व रु
 रुं रु वं रु च रु स ॥ ॥
 रु मा चि नी ॥ रु न नी च रु न
 रु व रु ना ना सि रु यि रु च
 यो रु मा लं रु म ना रु म रु र्थ का रु म रु का रु मा रु न रु म रु व रु व रु रु दि रु म

दिवन्नुमरुनाथ॥ ८ ॥ नवुरुवननिबोननदिनं कृसा मरुनाथ वरु १५ काः
 वरुमनरावनरुः सायन सायिकरुः॥ १६ काः॥ त्वं वरुकाय वरुसव
 यिथायचकं वरुथैवाधि यचमार्थदिनानुदहो वा (ननरागसमया १७
 ममकामस्य यदिष्टुसादि वरुमरुनाथ॥ य ॥ अकाचुमनविदुथा
 नासाविदुनचिर्क १८ कृसायचममरुनाथानाकदिनचिर्क॥ १९ काः॥ त्वं व

कृवाचमकलसादिनानुकंयि लाकार्थकार्यकचनमनकंयकृकं॥ कामादि
 माधुचनचयममनरुद कृदिष्टुसादिवन्नुमरुनाथ॥ २० ॥ कृमयति
 विदुसकावमूलिनिराव यिमनराय १९ मननिल ३३ नयचप्रयुक्त ना
 नयियुनानया २१ ॥ २२ काः॥ त्वं वरुकासा ममयाय मरुनाथ संवृद्धवसं
 किचकं॥ समनानुकंयी॥ कामादि माधुधाविधेव कृचनरुय कृदिष्टुसादिवम

देनाथ॥ सर्व॥ किमजवमुच्युमादिनासास्यदुनामिदु॥ किनिमामधुलचका
 ठारुनयसंकावस्वदु॥ ॥ अ॥ क॥ आलिदाहाधु॥ कभकवदनं वजाः
 द्यद्युहानी॥ ॥ अ॥ कालंमन
 वस्तिरुम॥ ॥ अ॥ क॥ रुवनासा
 कास्वामिरुव॥ ॥ गी॥ अ॥ वनिनि॥ अ॥ चलनरु॥ य॥ ॥ अ॥ क॥ अ॥ वनिनि॥ दि॥ रु॥ जानु

३०

सर्वरुसं चरवर्तु॥ अ॥ दिललकचमु॥ रु॥ रुनी॥ हा॥ क॥ या॥ सा॥ नि॥ वि॥ द॥ घ॥ न॥ हा॥ बी
 वं॥ च॥ दु॥ च॥ च॥ दु॥ च॥ दु॥ ॥ म॥ म॥ य॥
 रु॥ हा॥ ॥ अ॥ क॥ ॥ य॥ सा॥ स॥ र्व॥ व॥
 ध॥ म॥ म॥ बी॥ च॥ म॥ मा॥ रु॥ रु॥ गुः
 च॥ य॥ च॥ चि॥ रु॥ सं॥ का॥ ठ॥ ॥ अ॥ मा॥ दि॥ कं॥ यु॥ रु॥ या॥ य॥ न॥ मा॥ मि॥ नि॥ य॥ रु॥ रु॥ वा॥ धि॥ चि॥ ली॥ स॥ वं॥

० ॥ नमो मद्य युजां का वय लो कश्च संयुज यत् यथा ध्रुव दीय नैव शंरुः
 लमुनादि त्राय य ॥ बाग का माठ ॥ हं वीरु संरु व खेम मदे का नव वम
 द्वा विं हा न व द्वा द्वा धि वा १ द्वा द्वा रु जा व द व च द्वा द्वा व रु ल व क न ३१
 नं ॥ ध्रु ॥ न मा मि छी नी च कश्च वं मल रु व रु य रु ल नं ॥ ॥ च रु विं
 हा नि यी ० ध्रु व य रु कि हा वि र वि व ध्रु वं ध्रु रु ध्रु क य वि व रु ना दे वी संयु द्य क ल

लि क सिं हा ॥ ॥ य रु संय न आ लि का लि यु दा का ना गु नि मु द्वा १ द्वा द्वा वी
 ल व क रु वा न मा मि च क सं व च वा या ॥ ॥ स रु रु व रु न हा चं ठा रु
 ध्रु य रु न व सा यि नी रु छी कु लि हा १ द्वा न य नि वं म ना रु य म द्वा म धु
 ल आ ला धि ना ॥ ७ ॥ रु व मु वा वा य सं व च वृ यं मा गृ क य वा वा य व रु
 वा वा रु वृ यं म ना सा रु न रु य ॥ ॥ रु क ॥ गी रु ना रु ॥ क व न वृ य ला क श्च व

कवनवुशुवुद्धं १ अखयनीलं २ नमसाविविमुद्धं ॥ नाचयिजुवधुवकानक
 मान १ खदोमदमवुणीवन लहीचमाजा ॥ ५ ॥ सकचऊगनगुवु संस्र
 वविवा १ अनुयमकचुनक चकिमयचिन्ता ॥ संस्रच १ कुवुमयिनाम १ ३२
 विविधिविकल्यविनासन चुरा ॥ ३ ॥ अंकुलस्यानिलेकन अंकुचवी
 रुना १ अनुरुचधनसंठाकि संसाविविमुद्धं ॥ नाचयि १ ख्यादि १ ॥ ५ ॥ दवी

वाचाहीरुक्मादिनदंदा १ रुवरुचयदहनवी सावविमाया ॥ संस्रच १ ख्यादि १ ॥
 ३ ॥ केकवाचंरुवऊके रुवाचनिला १ अवधुवकाऊगानिमदस्र
 चंष्टो नाचयि १ ख्यादि १ ॥ ५ ॥ सकचविष्टरुकिमनियनिरु १ ख्या १ चानि
 यनिसुर्गानिवासनचूध १ संस्रच १ ख्यादि १ ॥ ३ ॥ रुलकुरुलकुरु
 मरुमलसूक्तु १ किनीरुवननाथ १ कुसस्रचवाया नाचयि १ ख्यादि १ ॥ ५ ॥

सावासावकृतातलिवृत्ता १ अनुयमसमयचममममममचिह्नासमचय्यादि
 ५॥ ७०॥ ॥ मूल ॥ सावा
 कृतल्यचकवर्तियाता
 रुभा ५०॥ ॥ ननवृद्धामुनि
 काचयवितावजममहाचहं सवेसावनचाजशा यल्ल ॥ ६॥ कानिमानादि

॥ ७०॥ ॥ सावा
 लनागवाजा सुदिकलनमिमं सवेग ॥ ३३
 द्वाकचयचमविर्तुं ददिनावडाजा गः वना
 यल्ल ॥ ६॥ कानिमानादि

नहामलुलगाकाशादिवल्लुवृताः याकाचजावनः कावनकलागृनसंवा
 हुक्काकुसमाशायमाशावि
 निकासानेवाललिनाधम
 निहाग ॥ ६॥ वदनादिकार्थ
 वीचाचदुस्ययविचाकुलिहाजना १ यं ३ मुक्ताकयाललं कना ॥ ६॥ कानि

सावद्वेकउम्वकं दहकिनयाचकयथा
 सुचरुवावावादि काधनही ॥ ॥ नदनच
 नरुन ॥ बाणकचववी ॥ नमामि १ धीरुचुव
 ॥ ६॥ कानि

नलहं खनिचननु॥ धु ॥ ननाहं १ मयववि यायिक कचुहामया सत्वड
 द्वेवहाही संववा ॥ ॥ नमा मि१ ठा रुमा विरु यिक वाद्य चर्म यठ मुड
 १ ठा ट लिं हं हा अदय ममा धिः व रु द्य धु आलि ह्य दं ॥ ॥ नमामि १ ३४
 आलि कालिय वायिका द्वा दहा रु रु वन धु वां १ ठ म वृ क च कि य व म
 सि धूला खदा हं क या ल या हा वृ क्क णि वा ॥ ॥ नमामि १ च रु वि हा नि यी १० ॥

धु व वि धु वि या यिक रु ला च ना १ रु के हा वि व वी व धु व ना थ न मा रु १ य म नृ थ धु
 ले ॥ ० ॥ १ ह्मा क ॥ न म रु ठा हा च क ना था य न म रु रु न दा यी न ॥ न म रु धु
 द्व नृ या य न म रु रु व को व क ॥ ७ ॥ यून य रुं कृ ता म रु व ली दा न वां ॥ व
 लि रु व ना ॥ रु ना यं का व न या दि १ ॥ वां आं डिं रं हं वां मो यां नां वं आः का
 रुं डिं व स मु ड रं यं व लि रु रु न न द नृ या वि डं का व रुं म वृ वृ यं रु कं ॥ हं का व रुं

यं च वायुस्वराभाः यं च यनाकाः स्वाकाच ऊवासुकीस्वरावा मयविनं हाकाचः
 ऊं विचिनुयुथमालावरुम
 हाकाच ऊं च ऊं जीकाच ऊं म
 वं वृधिवमत्यामाआचकः
 कमं यथागव वृधकाणीचि अदृहस ऊयनिच विनु काटिवया हां मिहा शुश

नकावा न्यामचकनं डं काच ऊं निलादिये
 हां खं काच ऊं मां हां काच ऊं सर्ववृधकां
 कायाविन सर्ववृध कयटाकादिचिज्ञानियथ

७७

यथा ह वलिमाला न्नाया युथादिरिसंयुयः सुनिया ० यनाथन स्वानन
 नगावा ऊकाययानदीयना
 दत्तामाडादिदिनानावां
 आदिकचत्वा यथाक्रम
 अजलकुसुममाला नाचलं यदि यं च न दृयचिदत्वा सर्वकर्मिकमनुमुचाः

नीनचकीकृधुच ० ॥ नृययकं यटिलिका
 नदत्वा हां ल्यादनं च हां कां यय च ऊवा
 केकयिधुं युवरागानवक मा (हा ह हा मः

योदकल्याणिमयुक्तं (हा) शुचिभूमिं वलियेषु वा स्युषयन् ॥ न तादातनयानि
 ० सुगन्धकलः ० यद्वैत्रमधु
 आगममूर्तकलहायानवि
 छीयी ० मध्यावलमलचक
 लिख्यीतदह नलान् विचक्षदा वाडिगमवैशाडिगुन। चकनाथनाथसद

लकंकुत्वातिष्ठुकिं गथाकिं ० यथाचयन्म
 शुद्धोचकैयिथादिद हागमननविष्टुदं ॥
 नाथवंदं गुचुवचमिलं मानकन ॥ दिवाव
 नाथनाथसद

३६

कामवाज्ञानवंदं सदासमृचथागसावान् ॥ न कावाकृतिं शुक्रमचुनि यधमा
 मगर्कवच नमध्यावरक
 विष्टुदनीलचंदेवाचयंष्टु
 यकं ॥ ॥ गगुणीतवामाः
 यकाष्टं रुनादिनामचयथ यरमाथेला माचरमचूयहाष्टुगवस्यहा ० क

संकुष्ठधवचवित्यन्नमर्वासाकं ॥ सर्वरुस
 द्रववदं सदा कामलवचलकिं शुद्धादयं ना
 दलीन ॥ नदनृवागद्वैदः ० खादिमयुकाका
 नाथनाथसद

धूनासिकासचो लानी यक्षार्दियीन यत् ॥ गुरुमाहुस्तु सांशुदिनामृत्
 विदुकिः स्नाययत् ॥ कमा ॥ नाकिमधुलगातां वायुकिः समाकृष्टा किनी
 युकि कानियीत्वा मरुत्तना ॥ वान्मत्रीमुखं किं सुत ॥ ॐ ह्रीं या स यत् ॥ सत् ३०
 बाठी या गहं कृ यो ॥ गीत ॥ काला यिध मूलं नरुत्त ॥ (६॥ क ॥ यस्मा सव
 विल्य कालमयि रं संजयत्य सो गत निरंधरा वील समादि क सुधं युत्वा सव

रुचं सन्वाथे यकि किन नृय वचि रं साग (६॥ मानि वं यरु या यन मा मिनी
 यमं कवा धिचि नात्मकं ॥ ॥ कदन मूल युजां काल यत् ॥ सद्य मधुलका
 वना ॥ कदन नैलात्मा सुना ॥ मका बुद्धि मास्व स्वाहील हाडु देवि गारि मा
 नाय विमव दय रं रुः ॥ नामृत्त धा वहा वधु मधुलं देवा या गत्य जा
 आमी यरु या यस्व रा वमहा क बुहा वहा संयुक्तं विमा कं यस्व रा वं सर्वः

वस्तुमंशुद्धं मावि का वायव्यमा र्थं सखं सवेयु का धन न तथा वा न यत्र म मूलं
 वयं विविक्त यत् ॥ दुःखं ॥ ३३ ॥ **गीत** ॥ नृत्तं गीत वा शोध्य ॥ च ॥ च ॥ अरु यत् ॥
गीत ॥ दूत आरु च न मुत्त ॥ **ह्ला** ॥ क ॥ वस्तु लिक वली व यानि क यदा इ ॥ ३४ ॥
 लिता विद्युत् विद्युत् विम
 गता यिनि विविदि न युदं या का मि धनं ज या वा गदा य वृत्त द य ॥ ३५ ॥ स ह जा य वंश

मरु ॥ ५ ॥ **गीत** ॥ जयं वा दृवी ॥ **ह्ला** ॥ क ॥ या दा यु य के सि वं स व ह द य ना स र्प
 विद्युत् व या मु का स वी स वा
 दू दामु दिता जी यु व च न ल
 मिद जन सुष दा का व य
का ॥ **ही** म सि द्वि म का न य या य वि स र्प य रु क ह ला लि कि न धा म या यि मु नि

दुनिमिह दनं जेला कवा शुभं माया लाविला हानि रुत मय कीडा वसु
 काविकं नत्वां मंडवलेक वा मिह गतां मधुला बांधिका ॥ य ॥ गीत ह
 हं देह धिवा ॥ **ध्या** क ॥ काची धा कुल विह संव य च व न व को यू का धि सि गी ॥ ७७
 हं सा चि वं वी नि म स्या क च का सा ख क या वा व वी ॥ न सो था द ह ॥ ठा व ना
 वलन रु वं य त्या ण ड मा व दः ॥ **ध्या** मा ना शु वाली ट हा ह से सु व द ना मु कि न मा वि

रुत ॥ ७ ॥ गीत सक व ड ॥ **ध्या** क ॥ धी रु व कं म हा चि वं वि धु र्द कू लि ॥ हा
 धु व नो मि नं व ड वा वा डी म हा नु ग व र वा गि न ॥ अ रि स ल्य रु स क ल्य
 मु य ति सि रु मा न मा हृ त्वा म न सि का ले नी ला चं व न मा सु र्ग ॥ ॥ न रु ह
 वा मि यु वा व ह ॥ गीत स व वृ ह ॥ **ध्या** क य द य मु मा च ॥ ॥ मु ला वा य न
 व सु दि त्वा कान नं धु रु का यि नि वा स स च कं य रु सो व या पृ ष ठ रु व मा था

घुचमोकारिः सुधुमा लायीव । आगेनीयागमं विवस्वरावयां नरेथनु ॥ नमो
 दानयानिनामधुलादेकः । कृत्वा । दक्षिणजानुमधुल यथिद्यामाचोया
 कृताक्षुलिनिष्ठः ॥ नमो ॥ ४०
 ॥ सुखसंयति संयनाम् । चा(गं)ष्टु कचनमाः । कामां मादादिमंयाः
 कं । सिद्धि कवन्तुनयुन ॥ ॥ (६) कां ॥ नमो ॥ नमो ॥ नमो ॥ नमो ॥ नमो ॥

दुस्वादा ॥ ॥ नमो वलिंयदायथनु ॥ गीतमवोयाला ॥ कवन्तुवलिचुय ॥
 ॥ नमो । नाचुवदीवाने । कं कृत्वा । मूलवलिं यवस्वयित । वलिथिष्टुका
 यादुयातु ॥ (६) यानन्यतय । दायथनु ॥ ॥ नमो ॥ कर्मावलि । वकंष्टुवः
 युक्तिनी । नमो ॥ कृताक्षुलिना । विमर्दनयाथथनु ॥ अनया । गायथा । यदथ
 ॥ ॥ नमो ॥ सुतं । गायकं । यं । यि० । रुद्रा । रुद्रं । यं । मला । मला । नमो ॥ मीयु

[illegible]

कनला रुया कसा यं म हा या य वा क (ग रु था व रु रु था मु रु था वा व रु
था गु रु रु था रु ले सा वा क रु वा शा ॥ म या का र मु नि रु रु शा रु रु ॥

८६३३ ॥ ७००

४४

ASHA ALIVES 2642

आशा सफ़वारी

2642

ASHA ARCHIVES



ASIA FORMOSA

2692

25